पौराणिक ग्रंथो के आलोक में खजुराहो, चर सोमनाथ मंदिर (चित्रकूट) में उमा माहेश्वरी का तुलनात्मक सांस्कृतिक अध्ययन

उत्कर्ष शुक्ला,
एम० एफ० ए० (दृश्य कला विभाग)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

प्रो० निरुपमा सिंह
(दृश्य कला विभाग)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

सारांश

भारत की मूर्तिकला परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है, जिसकी जड़ें सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर गुप्त और मध्यकालीन काल तक फैली हैं। मंदिर वास्तुकला न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र रही है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी प्रमुख माध्यम रही है। इस सांस्कृतिक विकास में पौराणिक ग्रंथों जैसे ऋग्वेद, शिव पुराण, विष्णु पुराण और रूपमण्डन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिनमें देवी-देवताओं के स्वरूप, लीलाएँ और प्रतिमा-विज्ञान का विस्तृत वर्णन मिलता है। विशेष रूप से उमा-माहेश्वरी की संयुक्त मूर्तियाँ इन ग्रंथों की आध्यात्मिक और दार्शनिक अवधारणाओं को मूर्त रूप प्रदान करती हैं। इसी परंपरा के उत्कृष्ट उदाहरण खजुराहो व चित्रकूट स्थित चर सोमनाथ मंदिर हैं, जो अपनी स्थापत्य कला, धार्मिक प्रतीकों और मूर्तिकला की विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं।

9वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य उत्तर भारत में चन्देल और बुन्देल राजवंशों का स्थापत्य और मूर्तिकला पर गहरा प्रभाव पड़ा। खजुराहो मंदिर जहाँ चन्देल कालीन कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, वहीं चर सोमनाथ मंदिर चन्देलबुन्देल राजवंशों के संक्रमण - काल का प्रतीक माना जाता है। इसकी शैली और मूर्तिशिल्प से स्पष्ट होता है कि यह भी उन्हीं कुशल कारीगरों की रचना है, जिन्होंने खजुराहो जैसे महान मंदिरों का निर्माण किया था।

इस शोधपत्र के माध्यम से पौराणिक ग्रंथों के आलोक में मध्य प्रदेश स्थित खजुराहो मंदिर तथा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट स्थित चर सोमनाथ मंदिर का तुलनात्मक अवलोकन किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इन दोनों मंदिरों की स्थापत्य शैली तथा उमा-माहेश्वरी से संबंधित प्रतिमाविज्ञान के आधार पर उनकी समानताओं और भिन्नताओं को उजागर करना है। साथ ही, इन स्थलों की सांस्कृतिक भूमिका एवं उनके ऐतिहासिक सामाजिक महत्व का-विश्लेषण भी इस शोध का एक प्रमुख पक्ष है।

मूल शब्द: उमा-माहेश्वरी, तुलनात्मक अध्ययन, मूर्तिकला, पौराणिक ग्रन्थ, प्रतिमा विज्ञान

भूमिका

भारतीय पौराणिक ग्रंथों के आलोक में यदि हम मंदिरों की सांस्कृतिक यात्रा को समझने का प्रयास करें, तो यह स्पष्ट होता है कि मंदिर केवल पूजास्थल न होकर धर्म, दर्शन, कला और समाज की चेतना के केंद्र रहे हैं। ग्रंथों जैसे *शिवपुराण*, *विष्णुपुराण*, रू*पमंडन* और *शिल्पशास्त्रों* में मंदिर निर्माण, देवप्रतिमाओं की स्थापना-, उनके भाव और मुद्राओं का जो विवरण मिलता है, वह भारतीय मूर्तिकला की नींव रखता है। उमामहेश्वरी जैसे दैवी युग्मों की प्रतिमाएं-, जो समरसता और संतुलन का प्रतीक हैं, इन ग्रंथों से प्रेरित होकर मंदिर स्थापत्य में व्यापक रूप से चित्रित की गई। इसी ग्रंथीय परंपरा की निरंतरता हमें 9वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य उत्तर भारत की मंदिर शिल्पकला में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जब चन्देल और बुन्देल राजवंशों का गहरा प्रभाव स्थापत्य और मूर्तिकला पर परिलक्षित होता है। यह कालखंड भारतीय कला और संस्कृति के लिए अत्यंत समृद्ध था, जब धार्मिक भावनाओं, दार्शनिक विचारों और जीवन के लौकिक पक्षों को मंदिरों की दीवारों पर उकेरा गया। खजुराहो के मंदिर चन्देल काल की उत्कृष्ट कला का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनकी नक्काशी, मूर्तिशिल्प और स्थापत्य शैली आज भी शोध और संरक्षण का विषय हैं। इसके विपरीत, चित्रकूट का चर सोमनाथ मंदिर 14वीं शताब्दी की अंतिम सांस्कृतिक लहर का प्रतिनिधि है, जब चन्देल प्रभाव धीरे समाहित हो रहा था धीरे बुन्देल कला में-(अग्रवाल ड.र ., 2022)।

खजुराहो के मंदिर अपनी उत्कृष्ट कला और ऐतिहासिक महत्त्व के कारण ''यूनेस्को विश्व धरोहर'' स्थल के रूप में संरक्षित किए गए हैं (प्रताप, 2020) ।इन पर वर्षों से विद्वानों और शोधकर्ताओं ने गहन अध्ययन किया, जिससे यह सुनिश्चित किया गया कि इनकी मूर्तिशिल्प और वास्तुकला को उचित संरक्षण मिले। खजुराहो की मूर्तियाँ आज भी अपने मूल स्वरूप में सुरक्षित हैं और इन्हें देखने के लिए विश्वभर से पर्यटक और शोधकर्ता आते हैं।

इसके विपरीत, चर सोमनाथ मंदिर की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक दयनीय है। यह मंदिर स्थानीय और प्रशासनिक संरक्षण के अभाव में धीरे-धीरे क्षय हो रहा है। चित्र सं० 1, चित्र सं० 2, चित्र सं० 4 इसकी अधिकांश मूर्तियाँ या तो खंडित हो चुकी हैं या फिर उपेक्षा के कारण धूल में दबी पड़ी हैं। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक ऐसा मंदिर, जो चन्देल और बुन्देल स्थापत्य कला की एक महत्वपूर्ण कड़ी हो सकता है, उचित संरक्षण के अभाव में अपना अस्तित्व खोने के कगार पर है।

भारतीय मंदिरों की पहचान उनकी अनूठी मूर्तिकला से होती है। खजुराहो के मंदिर 9वीं से 12वीं शताब्दी के बीच चंदेल राजाओं द्वारा निर्मित किये गये और अपनी कामुक मूर्तियों, धार्मिक दृश्यों, और दैनिक जीवन के चित्रण के लिए प्रसिद्ध हैं (प्रताप,

2020)। और यह नागर शैली की स्थापत्य कला तथा अद्वितीय मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध हैं। वही दूसरी ओर, चर सोमनाथ मंदिर 14वीं शताब्दी का एक महत्वपूर्ण मंदिर है (अग्रवाल ड. र., 2022)। जो चंदेल और बुंदेलकालीन स्थापत्य शैलियों को समाहित करता है। जिसकी मूर्तियाँ मुख्य रूप से धार्मिक और पारंपरिक स्वरूप की हैं। जहाँ चंदेल शासको का अन्त तो हो रहा था परन्तु उनके कारीगरों का प्रभाव भी आस पास के मंदिरों में वस्तुत देखा जा सकता है।

इन दोनों मंदिरों की सांस्कृतिक संरचना में उमा-माहेश्वरी की प्रतिमाएँ विशेष महत्व रखती हैं। पौराणिक ग्रंथों जैसे शिव पुराण, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, रूपमंडन और लिंग पुराण में उमा-माहेश्वरी का वर्णन शिव और शक्ति के अभिन्न युग्म के रूप में किया गया है, एक ऐसा दिव्य स्वरूप जो सृष्टि, पालन और संहार की शक्ति का प्रतीक है। ये ग्रंथ प्रतिमा-विज्ञान की दृष्टि से यह निर्धारित करते हैं कि उमा-माहेश्वरी की संयुक्त प्रतिमा में कौन-से मुद्राएँ, भाव-भंगिमाएँ और प्रतीक होने चाहिए, जो देवत्व के साथ-साथ सौंदर्य और श्रृंगार का भी प्रतिनिधित्व करती हैं।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व

खजुराहो और चर सोमनाथ मंदिर, दोनों ही उत्तर भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं, जो अपने- हैं। खजुराहो मंदिरों का निर्मा अपने कालखंड और स्थापत्य शैलियों में गहरे अर्थ समेटे हुए9वीं से 12वीं शताब्दी के बीच चंदेल राजाओं द्वारा किया गया था, जो हिन्दू और जैन धर्म से संबंधित आस्थाओं को समर्पित हैं। इनमें से कंदरिया महादेव मंदिर विशेष रूप से भगवान शिव को समर्पित है और उमामहेश्वरी की मूर्तियाँ वैदिक एवं तांत्रिक परंपराओं के समन्वय को मूर्त रूप देती हैं। - खजुराहो की मूर्तिकला केवल धार्मिक अभिव्यक्तितक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, नृत्य, संगीत, प्रेम और सौंदर्य जैसे जीवन के विविध आयामों को दर्शाती है, जो इसे भारतीय कला का एक जीवंत उदाहरण बनाते हैं। नागर शैली की स्थापत्य योजना और गहन अलंकरण इसे विश्व कला धरोहर में शामिल करने योग्य बनाते हैं, और यही कारण है कि इसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है (S.P. Gupta, 2020) (अग्रवाल क. ल., 1980)।

वहीं चर सोमनाथ मंदिर, जो चित्रकूट क्षेत्र में स्थित है, विशेष रूप से भगवान शिव को समर्पित एक महत्वपूर्ण स्थल है, जिसकी वर्तमान अवस्था खंडित होने के बावजूद इसकी श्रद्धा और सांस्कृतिक ऊर्जा में कोई कमी नहीं आई है। स्थानीय समाज इस मंदिर को आज भी अत्यंत श्रद्धा के साथ पूजता है, और यहाँ के धार्मिक अनुष्ठान, जैसे रुद्राभिषेक और महाशिवरात्रि पर विशाल जनसमागम, इसे एक जीवंत तीर्थस्थल के रूप में स्थापित करते हैं। वैदिक धर्मशास्त्रों और पूजा के शास्त्रीय नियमों के अनुसार खंडित मूर्तियों की विधिवत पूजा वर्जित मानी जाती है। तथापि, चित्रकूट के स्थानीय समाज ने इस शास्त्रीय निषेध को अपनी गहन

धार्मिक श्रद्धा और सांस्कृतिक परंपरा के आलोक में पुनः परिभाषित किया है। यहाँ के जनमानस के लिए यह मंदिर न केवल एक भौतिक संरचना है, अपितु उनके विश्वास, भक्ति और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक भी है।

इस प्रकार, खजुराहो और चर सोमनाथ मंदिर दोनों ही धार्मिक केंद्रों के रूप में पूजनीय हैं, किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से खजुराहो एक संरक्षित, वैश्विक पहचान प्राप्त स्थल है, जबकि चर सोमनाथ मंदिर एक जीवंत, लोक-आस्था से पोषित धार्मिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों मंदिर भारतीय धार्मिकता की विविध अभिव्यक्तियों और सांस्कृतिक गहराइयों को उजागर करते हैं।

शिव और शिवलिंग की मूर्तियाँ

चर सोमनाथ मंदिर में मुख्य आकर्षण भगवान शिव का शिवलिंग है, जो सृजन और ऊर्जा का प्रतीक है। प्रांगण में लगभग 20 छोटे-बड़े शिवलिंग हैं। जोकि 14वी शताब्दी के आस पास के काल के है (अग्रवाल ड. र., 2022)। यह शिवलिंग अलग अलग आकृतियो में बलुवा पत्थर में निर्मित है। कुछ शिवलिंग साधारण व कुछ में शेषनाग और एक मुखी शिव निर्मित है।

चित्र सं०1   शिवलिंग चर सोमनाथ मंदिर, चित्रकूट, उ० प्र०

खजुराहो के मंदिर में यहाँ शिव-पार्वती, कामुक मूर्तियाँ, नृत्यरत अप्सराएँ, संगीतकार, दैनिक जीवन के दृश्य की कई मूर्तियाँ हैं, जिनमें इन सभी को विभिन्न मुद्राओं में दिखाया गया है। खजुराहो में शिवलिंग के साथ-साथ शिव-पार्वती के प्रेमपूर्ण दृश्य भी उकेरे गए हैं (kramrisch, homage of khajuraho, 2019)।

इन दोनों मंदिरों में शिव की समान रूप से उमा महेश्वरी की मूर्ति देखी जा सकती है। उमा महेश्वरी की प्रतिमा का विवरण **'विष्णुधर्मोत्तरपुराण'** और **'रूपमण्डन'** में देखा जा सकता है (श्रीवास्तव, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति कला , 2015)।

1. **'धर्मोत्तरपुराणविष्णु'**के अनुसार उमा महेश्वरी की प्रतिमा में शिव और उमा को एक ही आसन पर आलिंगन मुद्रा में दिखाया जाता है। शिव के सिर पर जटा होता है। उनके दाहिने हाथ में(जटाओं का गुच्छा) जूट-नीलकमल और बायाँ हाथ उमा (नीलोत्पल) श्रीवास्तव) थ शिव के कंधे पर और बायाँ हाथ कमल पुष्प पकड़े हुए दिखाया जाता हैके कंधे पर होता है। उमा का दाहिना हा, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति कला , (2015।

2. **'रूपमण्डन' के अनुसार** – इस प्रतिमा में शिव को चार भुजाओं है। उनका एक हाथ उमा के रूप में दिखाया जाता (चतुर्भुज) के कंधे पर और दूसरे हाथमें साँप होता है। साथ ही (सर्प), इस मूर्ति के साथ वृषभ (बैल), स्कन्द (कार्तिकेय), नन्दी और नृत्य करते हुए भृंगी ऋषि को भी दर्शाया जाता है (श्रीवास्तव, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति कला , 2015)।

चित्र सं० 2 उमा महेश्वरी, चर सोमनाथ मंदिर, चित्रकूट, उ० प्र०

चर सोमनाथ मंदिर के प्रांगण में कई प्रकार की उमा महेश्वरी की खण्डहित मूर्ति देखि जा सकती है। जो कि मंदिर प्रांगण में खुले वातावरण में नष्ट हो रही है। जोकि 14वी शताब्दी के आस पास के काल के है (अग्रवाल ड. र., 2022)। यह प्रतिमा बलुवा पत्थर में निर्मित है। इस प्रतिमा के पत्थर के कण खुरदुरे, पत्थर का रंग हल्का भूरा है, और यह मूर्ति बहर प्रांगण में होने के करण इसके पत्थर में हल्का कायी (हल्का हरा) का रंग देखने को मिलता है। चित्र स० 2 में शिव और उमा को एक ही पत्थर शिला में आसन पर आलिंगन मुद्रा में दिखाया जाता है। और शिव के कंधे में उमा का बायाँ हाथ रखा है। उनका दायाँ हाथ खंडित है। मूर्ति शिल्प में शिव जी बायाँ हाथ खंडित है।

शिव जी के नीचे खंडित बायाँ पैर के पास नंदी की प्रतिमा भी बनी है। इस मूर्ति को देखकर श्रंगार रस की उत्पत्ति होती है। क्युकि इनकी मुद्रा प्रेम पूर्वक दिख रही है। मूर्ति में उमा शिव की बाईं जाँघ पर बैठी हैं और उन्हें आलिंगन कर रही हैं। आस पास खण्डहित रूप अलग अलग देवता, गंधर्व पत्थर की शिला में उत्कीर्णन तकनीक से निर्मित किया गया है। इस प्रतिमा को देखने से प्रतीत होता है कि, इसका पत्थर खुरदुरा बलुवा पत्थर है। क्युकि उत्तर भारत में उस समय के कारीगर मूर्ति के निर्माण में बलुवा पत्थर से नक्काशिया करते थे। इस प्रतिमा को देखकर प्रतीत होता है की शिव और उमा के चतुर्भुज हाथ है।

चित्र सं० 3 उमा महेश्वरी, खजुराहो, म० प्र०

प्रस्तुत चित्र स० 3 की मूर्ति वर्तमान में इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज, उ० प्र० में संग्रहित है। यह मूर्ति खजुराहो, छतरपुर, म० प्र० से ली गयी है। इसका समय

लगभग 11वी शती ई० है। यह प्रतिमा बफ बलुवा पत्थर में निर्मित की गयी है। मूर्ति में मुकुट और अभूषण में बारीक़ अलंकारं आसानी से देखा जा सकता है। शिव जी के बाये हाथ में त्रिशूल है। उमा और शिव के बीच में पैरो के नीचे नंदी की प्रतिमा बनी है। आस पास देवी देवता गन्धर्वो की शिला में उभार सतह उत्कीर्णन पद्धति से मूर्ति निर्मित की गयी है। इस मूर्ति को देखकर श्रंगार रस की उत्पत्ति होती है। क्युकि इनकी मुद्रा प्रेम पूर्वक दिख रही है। मूर्ति में उमा शिव की बाईं जाँघ पर बैठी हैं और उन्हें आलिंगन कर रही हैं। शिव प्रेमपूर्वक झुकी हुई आँखों के साथ दिखाई गई हैं। उमा उनके चेहरे को प्यार से ऊपर उठा रहे हैं, और उमा के पैरों के नीचे सिंह बना हुआ है। इस प्रतिमा को देखकर प्रतीत होता है की शिव और उमा के चतुर्भुज हाथ है।

प्रस्तुत चित्र स० 4 चर सोमनाथ मंदिर, चित्रकूट, उ० प्र० के प्रांगण में खण्डहित रूप में है इसका अधिकांश भाग खंडित है। यह प्रतिमा 14वी शताब्दी के आस पास के काल के है (अग्रवाल ड. र., 2022)। यह प्रतिमा बलुवा पत्थर में निर्मित है। इस प्रतिमा के पत्थर के कण खुरदुरे, पत्थर का रंग हल्का भूरा है। शिव जी के बाये हाथ में त्रिशूल है। और उमा जी का हाथ शिव जी के कंधे में है। मूर्ति में उमा शिव की बाईं जाँघ पर बैठी हैं और उन्हें आलिंगन कर रही हैं। बाकि अधिकांश भाग खण्डहित होने के करण बाकी आकृतियां समझना कठिन है। परन्तु इसकी तुलना और उमा महेश्वरी की मूर्ति से करने पर यह कह सकते है कि यह भी उन्ही मूर्तियों में से एक है। । इस प्रतिमा को देखने से प्रतीत होता है कि, इसका पत्थर खुरदुरा बलुवा पत्थर है। क्युकि उत्तर भारत में उस समय के कारीगर मूर्ति के निर्माण में बलुवा पत्थर से नक्काशिया करते थे।

चित्र सं० 4 उमा महेश्वरी, चर सोमनाथ मंदिर, चित्रकूट, उ० प्र०

प्रस्तुत चित्र स० 5 की मूर्ति वर्तमान में इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज, उ० प्र० में संग्रहित है। यह मूर्ति खजुराहो, छतरपुर, म० प्र० से ली गयी है। इसका समय लगभग 11वी शती ई० है। यह प्रतिमा चिकना बलुवा पत्थर में निर्मित की गयी है। मूर्ति में उमा शिव की बाईं जाँघ पर बैठी हैं और उन्हें आलिंगन कर रही हैं। मूर्ति के अभूषण में बारीक़ अलंकारं आसानी से देखा जा सकता है। शिव जी की जटाओ में भी अभूषण का गुच्छ अलंकृत प्रतीत हो रहा। आस पास देवी देवता, फूल लटाए' गन्धर्वो की शिला में उभार सतह उत्कीर्णन पद्धति से मूर्ति निर्मित की गयी है। इस

चित्र सं०5 उमा महेश्वरी, खजुराहो, म० प्र०

मूर्ति को देखकर श्रंगार रस की उत्पत्ति होती है। क्युकि इनकी मुद्रा प्रेम पूर्वक दिख रही है। शिव प्रेमपूर्वक झुकी हुई आँखों के साथ उमा को देख रहे है। और उमा उनके चेहरे को प्यार से ऊपर उठा रहे हैं, और उमा के पैरों के नीचे सिंह बना हुआ है।

चर सोमनाथ मंदिर और खजुराहो मंदिर में मूर्तियों का तुलनात्मक चार्ट

विशेषताएँ	चर सोमनाथ मंदिर, चित्रकूट, उ.प्र .	खजुराहो मंदिर, छतरपुर, म.प्र .
स्थान	चर, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश	खजुराहो, छतरपुर, मध्य प्रदेश
मूर्ति की संरचना	खंडित अवस्था में, मंदिर प्रांगण में खुली रखी गई	अच्छी तरह संरक्षित, संग्रहालय में सुरक्षित
समयकाल	14वी शताब्दी (चंदेल और बुन्देल काल के आस पास) (अग्रवाल ड. र., 2022)	11वीं शताब्दी (चन्देल काल) .
पत्थर	बलुवा पत्थर	बलुवा पत्थर
मूर्ति की मुद्रा	शिव और उमा आलिंगन मुद्रा में, उमा शिव की जंघा पर बैठी	शिव और उमा आलिंगन मुद्रा में, उमा शिव की जंघा पर बैठी
हाथों की स्थिति	उमा का हाथ शिव के कंधे पर रखा हुआ, दूसरा हाथ खंडित। शिव जी का एक हाथ खंडित, बाएं हाथ में त्रिशूल	उमा का हाथ शिव के कंधे पर, दूसरा हाथ उनके चेहरे की ओर उठा हुआ। शिव के बाएं हाथ में त्रिशूल
अलंकरण एवं श्रृंगार	अलंकरण बहुत स्पष्ट नहीं, खंडित अवस्था के कारण	बारीक अलंकरण स्पष्ट रूप से उकेरा गया मुकुट और आभूषण विस्तृत रूप से अलंकृत शिव की जटाओं में भी अलंकरण
तकनीकी विशेषताएँ	पत्थर की सतह अपेक्षाकृत खुरदुरी। शिल्प में नक्काशी की शैली चन्देलबुंदेल प्रभाव / दर्शाती है।	चिकनी सतह, शिल्पकला उत्कृष्ट। उत्कीर्णन पद्धति में गंधर्व एवं देवीदेवता - उभरे हुए।
संरक्षण की स्थिति	उचित संरक्षण नहीं, मूर्ति खुले में क्षतिग्रस्त हो रही	संरक्षित, संग्रहालय में रखा गया
मूर्ति से उत्पन्न भाव (रस)	श्रंगार रस, किंतु खंडित होने से सौंदर्य में कमी	श्रंगार रस, प्रेम भाव सौंदर्यपूर्ण स्पष्ट रूप से प्रदर्शित

इस तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिव और उमा महेश्वरी की मूर्तियों का विशेष अध्ययन करने पर खजुराहो और चर सोमनाथ मंदिर में शिव-पार्वती की प्रेममय मूर्तियाँ अत्यंत अलंकृत एवं भावनाओं से ओत-प्रोत हैं, और इसे देखकर श्रृंगार रस कि

उत्पत्ति होती है। और दोनों जगहों की प्रतिमाये बलुवा पत्थर से निर्मित है। चर सोमनाथ में ये मूर्तियाँ खंडित अवस्था में हैं और संरक्षण के अभाव में क्षतिग्रस्त हो रही हैं। खजुराहो में उमा महेश्वरी की मूर्तियाँ उत्कृष्ट शिल्पकला और सूक्ष्म अलंकरण का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जबकि चर सोमनाथ में इन्हें अपेक्षाकृत साधारण शैली में निर्मित किया गया है।

खजुराहो की उमा महेश्वरी मूर्तियाँ संरक्षित एवं अलंकरण में समृद्ध हैं, जबकि **चर सोमनाथ मंदिर की मूर्तियाँ खंडित एवं उपेक्षित हैं**। दोनों मंदिरों में मूर्तियों की मुद्रा एवं भावाभिव्यक्ति समान हैं, किंतु **शिल्प की गुणवत्ता, अलंकरण, एवं संरचना में अंतर दिखाई देता है**। चर सोमनाथ मंदिर की मूर्तियों के संरक्षण की आवश्यकता है, ताकि वे भी भारतीय मूर्तिकला की उत्कृष्ट धरोहर के रूप में सुरक्षित रह सकें।

निष्कर्ष

भारतीय सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक प्रतीकों और पौराणिक धारणाओं की दो भिन्न, किंतु परस्पर जुड़ी अभिव्यक्तियाँ हैं। पौराणिक ग्रंथों में वर्णित उमा-महेश्वरी की संयुक्त प्रतिमाएँ भारतीय धार्मिक कला की एक सशक्त अवधारणा रही हैं, जो न केवल आध्यात्मिक एकता का प्रतीक हैं, बल्कि दार्शनिक समरसता, स्त्री-पुरुष की समानता एवं लौकिक जीवन के संतुलन को भी दर्शाती हैं। ऋग्वेद, विष्णुधर्मोत्तरपुराण और रूपमंडन जैसे ग्रंथों में जिन प्रतिमा-विज्ञान की व्याख्याएँ मिलती हैं, उनका प्रभाव खजुराहो तथा चर सोमनाथ मंदिर की मूर्तिकला में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। खजुराहो के मंदिर, विशेषतः चन्देल काल में निर्मित, जहाँ उमा-महेश्वरी की मूर्तियाँ कलात्मक सौंदर्य, शिल्पीय परिष्कार और भाव-समृद्धि का अद्भुत उदाहरण हैं, वहीं चर सोमनाथ मंदिर, यद्यपि खंडित अवस्था में है, फिर भी उसमें उमा-महेश्वरी की मूर्तियों में धार्मिक भाव और सांस्कृतिक गहराई विद्यमान है। चर सोमनाथ मंदिर की मूर्तियाँ अपेक्षाकृत सरल एवं पारंपरिक हैं, किंतु वहाँ की जनश्रुति, लोक आस्था और निरंतर प्रचलित पूजन परंपराएँ इसे एक जीवंत धार्मिक स्थल बनाती हैं। यह तुलनात्मक अवलोकन केवल स्थापत्य या मूर्तिशिल्प का तकनीकी विश्लेषण नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की विविध सांस्कृतिक धारणाओं, धार्मिक विश्वासों और सौंदर्य दृष्टियों को समझने का माध्यम भी है। यदि चर सोमनाथ मंदिर को संरक्षित किया जाए, तो यह क्षेत्र धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक शोध का एक नया केंद्र बन सकता है। प्रशासनिक एवं शैक्षणिक प्रयासों के माध्यम से इस उपेक्षित धरोहर को पुनर्जीवित करना न केवल स्थानीय सांस्कृतिक चेतना को सशक्त करेगा, बल्कि भारतीय विरासत के संरक्षण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम होगा। अतः यह आवश्यक है कि भविष्य के शोधार्थी, इतिहासकार और पुरातत्त्वविद् पौराणिक ग्रंथों के आलोक में इन मंदिरों का गहन अध्ययन करें, जिससे भारत की बहुआयामी सांस्कृतिक परंपरा को एक समग्र दृष्टिकोण से समझा जा सके। खजुराहो और चर सोमनाथ की तुलना यह सिद्ध करती है कि भारतीय कला परंपरा में विविधता के साथ-साथ एकता का भाव भी निहित है, जहाँ एक मंदिर सौंदर्य और भोग की दार्शनिक अभिव्यक्ति है, वहीं दूसरा धर्म, श्रद्धा और साधना की साकार प्रतिमा।

संदर्भ सूची

(अनुवादित), ड. ग. (2016). ऋग्वेद [संस्कृत पाठ]. संस्कृत साहित्य प्रकाशन. https://archive.org/details/rigveda-hindi-dr-ganga-sahay-sharma/page/n1/mode/1up

Archaeological Survey of India. (n.d.). Retrieved from https://asi.nic.in/pages/WorldHeritageKhajuraho

Chhatarpur district administration. (n.d.). Retrieved from https://chhatarpur.nic.in/en/history/

Chitrakoot district administration. (n.d.). Retrieved from https://chitrakoot.nic.in/chitrakoot_tourism-2/

Directorate of Census, O. L. (2011). भारत की जनगणना . Retrieved 2011, from censusindia: https://censusindia.gov.in/census.website/

Dutt, N. (2022). Stone sculptures distinct approaches in post independence India. Retrieved 2022, from shodhganga: https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/502815

jagran. (2016, september 23). Retrieved from https://www.jagran.com/uttar-pradesh/chitrakoot-14745498.html

Kramrisch, S. (1946). the hindu temple. new delhi: motilal banarsidas.

Kramrisch, S. (2019). homage of khajuraho. bombay: marg publication.

Kumar, V. (2020). Crowdfunding for Heritage: Temple Restoration in the Digital Age. Banglore: TechHeritage Press.

Lal, K. B. (2015). Tulsidas ki Janmasthali Chitrakoot. DELHI: Manoj Publication.

Lalitpur District Administration. (n.d.). Retrieved from Lalitpur district: https://lalitpur.nic.in/en/tourist-place/devgarh/

Mishra, R. (2021). प्रयागराज के गढ़वा किले की जानें ऐतिहासिक दास्तान, इतिहास समेटे हुए है यह किला, यूं ही नहीं पर्यटकों को है लुभाता. denik jagran. https://www.jagran.com/uttar-pradesh/allahabad-city-the-garhwa-fort-located-in-shankargarh-area-of-prayagraj-was-built-by-baghel-king-vikraditya-21293917.html

Pathak, D. (Delhi). ancient indian sculpture and painting. 2015: Jyotsana publication.

Prajapati, S. (2024). Chitrakoot shilp ek vishleshnatmak addhyayan. Retrieved 2024, from shodhganga: https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/628722#

S.P. Gupta, S. P. (2020). Elements of Indian Art Including Temple Architecture, Iconography & Iconomentry. New Delhi: Indraprstha Museum of Art and Archaeology.

Singh, R. (New Delhi). Sacred Spaces: Conservation of Temples in India. 2nd ed. 2015: Heritage Publications.

U.P. tourism. (n.d.). Retrieved from https://sd2.tourism.gov.in/DocumentRepoFiles/InceptionReport/INRa5e9451b-aea3-4c60-9484-bb0b095256f6.pdf

Unesco. (n.d.). Retrieved from https://whc.unesco.org/en/list/240/

Singh Vikas, D. C. (2022). Historical and Religious Places of Rural Tourism in Chitrakoot Region . International Journal of Creative Research Thoughts, 9.

अग्रवाल, क. ल. (1980). खजुराहो . नई दिल्ली : दि मैकलिन कंपनी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड .

अग्रवाल, ड. र. (2022). विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति के जागरूकता का अध्ययन. झाँसी: E-Book संस्करण (बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय). https://archive.org/details/kaagaz-20220727-145937436450

अवस्थी, ड. र. (1967). खजुराहो की देव प्रतिमाये (प्रथम संस्करण). आगरा : ओरियंटल पब्लिशिंग हाउस .

उपाध्याय, व. (1972). प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर. पटना: बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी.

श्रीवास्तव डॉ ब्रजभूषण. (2015). प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति कला . वाराणसी : विश्वविध्यालय प्रकाशन, वाराणसी .

तुलसीदास, श. ग. (n.d.). श्रीरामचरितमानस. In ह. पोद्धार. गीता प्रेस गोरखपुर (E- संस्करण). https://archive.org/details/shri-ramcharitmanas-gita-press-hindi/mode/1up

रूपमण्डन [संस्कृत पाठ]. (n.d.).

अग्रवाल वासुदेव शरण. (1987). भारतीय कला . वाराणसी : विश्वविध्यालय प्रकाशन.

विष्णुधर्मोत्तरपुराण [संस्कृत पाठ] प्रथम खण्ड, अध्याय 43. (1929). Delhi: E- संस्करण. https://archive.org/details/9000000004657SriVishnuDharmottaraMahapuranam1000pSANSKRIT1929/mode/1up

श्री शिवमहापुराण [संस्कृत पाठ]. (n.d.). Delhi: गीता प्रेस गोरखपुर (E- संस्करण). https://archive.org/details/SHIVPURANHINDI/mode/1up

श्रीवास्तव, ड. ब. (2015). प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला . वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन .

चित्र सूची

- चित्र सं० 1 शिवलिंग चर सोमनाथ मंदिर, चित्रकूट, उ० प्र०, उत्कर्ष शुक्ला, 2024 5
- चित्र सं० 2 उमा महेश्वरी, चर सोमनाथ मंदिर, चित्रकूट, उ० प्र०, उत्कर्ष शुक्ला, 2024 6
- चित्र सं० 3 उमा महेश्वरी, खजुराहो, म० प्र०, सुमेधा गुप्ता, 2024 7
- चित्र सं० 4 उमा महेश्वरी, चर सोमनाथ मंदिर, चित्रकूट, उ० प्र०, उत्कर्ष शुक्ला, 2024 8
- चित्र सं० 5 उमा महेश्वरी, खजुराहो, म० प्र०, सुमेधा गुप्ता, 2024 9